http://www.rtuonline.com

हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न पत्र–निबन्ध एवं नाटक

Time Allowed : Three Hours **Maximum marks : 100**

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये:

(क) आजकल हिन्दी संक्रान्ति की अवस्था में है। हिन्दी कवि का कर्त्तव्य है कि वह लोगों की रूचि का विचार रखकर अपनी कविता ऐसी सहज और मनोहर रचे कि साधारण पढ़े-लिखे लोगों में भी पुरानी कविता के साथ-साथ नई कविता पढ़ने का अनुराग उत्पन्न हो जाये। पढ़ने वालों के मन में नई-नई उपमाओं को, नये-नये शब्दों को और नये-नये विचारों को समझने की योग्यता उत्पन्न करना कवि का कर्त्तव्य है। जब लोगों का झुकाव इस ओर होने लगे, तब समय-समय पर कल्पित अथवा सत्य आख्यानों के द्वारा सामाजिक, नैतिक और धार्मिक विषयों की मनोहर शिक्षा दें। 10

अथवा

''विचारों की एकता जाति की सबसे बड़ी एकता होती है। भारतीय जनता की एकता के असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य हैं जो अनेक भाषाओं में लिखे जाने पर भी, अन्त में जाकर एक ही साबित होते हैं। यह भी ध्यान देने की बात है कि फारसी लिपि को छोड़ दें तो भारत की अन्य सभी लिपियों की वर्णमाला एक ही है। 10

(ख) ''मैं आज ही सब गहने वापस कर दूँगा। अपनी विपत्ति के समय अपनचे शराबी पति के डर से, उसने सब आभूषण मेरे पास रख दिये थे।'' लिली कल बड़ी हो जायेगी तो मैं उसकी शादी कैसे करूँगी? उसने कहा था, ''उस समय तो एक तीली भी न बचेगी'' और उसकी विनय और विपत्ति को देखकर मैंने यह बोझ अपने कन्धों पर लेना स्वीकार कर लिया था। मैं आज ही सब कुछ वापस कर दूँगा। मेरी ओर से कोई सारे के सारे उड़ाकर ले जाये, उसका शराबी पति उन्हें गँवा दे, उड़ा दे, मेरी ओर से लिली का ब्याह न हो, यह निर्दोष भोली-भाली लड़की अयोग्य भिखमंगे के हाथ पड़ जाये-मेरी बला से-मुझे क्या? मैं आज ही उसके सब गहने वापस कर

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

दूँगा। 10

अथवा

भाग्य तो सबके साथ होता है, धाया माँ! ये नूपुर मेरे पैरों में पड़े हैं तो इनका भी भाग्य है। मेरे पैरों की गति में गीत गाते हैं, तो वह भी इनका भाग्य है। मेरे आगमन का संदेश पहले ही पहुँचा देते हैं, वह भी इनका भाग्य है और जब मेरे पैर रुक जाते हैं तो ये मौन हो जाते हैं, वह भी इनका भाग्य है। भाग्य तो सबके होता है धाय माँ! तुम नगर के उत्सव में भाग नहीं ले रही हो, न लो। महाराज बनवीर का साथ नहीं दे रही हो, न दो। मैं कौन होती हूँ बीच में बोलने वाली। 10

(ग) राजमाता, क्या आपको मेरी स्वामिभक्ति में कोई सन्देह है ? क्या मैं कोई कपट कर रहा हूँ.... मैंने ही नहीं, मेरे पुरुखों ने भी इस राजघरानों का नमक खाया है। मेरा भी इस राजघराने के प्रति कोई कर्त्तव्य है। उसी से मेरा मुँह खुल रहा है। उसी से मैंने जोगियों का सहारा लिया था.... राजकाज में भावुकता से काम नहीं चलता। मैं महारावल की भावना का हृदय से सम्मान करता हूँ। वे निश्छल हैं। इसी से उन्हें हर व्यक्ति में एक पुनीत आत्मा नजर आती है। पर वास्तविकता कुछ और ही है।.......राजघराने में षड्यन्त्र तो सदा चलते ही रहे हैं।.....इस समय भी चल रहे होंगे। पर हमें उन पर आँख रखनी है। उनसे सावधान रहना है। मेरी दृष्टि में गोविन्द स्वामी एक खतरनाक इंसान है। उसे अभी नहीं रोका गया तो वह अंधड़ बनकर सारे राज्य पर छा जायेगा। 10

अथवा

मैं सोचता हूँ कि यह समाज कब बदलेगा ? क्या हर बार वह समाज एक ही गलती को दोहराता जाएगा ? तब समाज को क्या लाभ मिलेगा ?.... मैं नहीं जानता हूँ कि अच्छा इन्सान हूँ या बुरा। लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूँ कि मैंने स्वप्न में भी कोई अपराध नहीं किया है। फिर भी इस समाज ने यहाँ ला खड़ा किया है। आखिर क्यों ? कौन देगा, मेरे इस प्रश्न का उत्तर! मैं यहाँ किसी से उत्तर नहीं माँग रहा हूँ, परन्तु यह अवश्य कहने जा रहा हूँ कि इस प्रश्न पर पूरे समाज को सोचना चाहिए। यह निर्णय दूनिया की कोई अदालत नहीं ले सकती है। यह मुकदमा समाज का है और इसका फैसला पूरे समाज को करना है। 10

2. "तुलसी को सामाजिक विचारधारा संकीर्ण न होकर गतिशील है।" इस कथन की विवेचना "तुलसी के सामाजिक मूल्य" निबन्ध के आधार पर कीजिये।(शब्द सीमा : 500 शब्द) 18

अथवा

'पार्थिव धर्म' निबन्ध में डॉ. विद्या निवास मिश्र ने विचार व्यक्त किये हैं, उन्हें स्पष्ट कीजिये। (शब्द सीमा : 500 शब्द) 18

3. एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'दीपदान' एकांकी की समीक्षा करते हुए उसके नामकरण और उद्देश्य स्पष्ट कीजिये। (शब्द सीमा : 500 शब्द) 18

अथवा

"ईद और होली" एकांकी साम्प्रदायिक विद्वेष पर इंसानियत की विजय का प्रमाण

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

प्रस्तुत करता है। इस कथन के आलोक में इस एकांकी की समीक्षा कीजिये।
(शब्द सीमा : 500 शब्द) 18

4. 'रक्त ध्वज' नाटक का उद्देश्य भगत पथ के सिद्धान्त और गोविन्द स्वामी के जीवन को वाणी देना है। युक्तियुक्त समीक्षा कीजिये। (शब्द सीमा : 500 शब्द) 18

अथवा

'रक्त ध्वज' नाटक एक ऐतिहासिक नाटक है। इस कथन के आलोक में रक्त ध्वज नाटक की समीक्षा कीजिये। (शब्द सीमा : 500 शब्द) 18

5. हिन्दी नाटक के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिये।(शब्द सीमा : 500 शब्द) 16

अथवा

निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणी लिखिये–

निबन्ध की परिभाषा और उसके भेद

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक का विकास

हिन्दी एकांकी के प्रकार

बालकृष्ण भट्ट की निबन्ध कला

अभिशीलता एवं रंगमंचीय का एकांकी में महत्त्व

भारतेन्दु युग और हिन्दी नाटक

नाटककार मोहन राकेश

समस्या नाटककार : लक्ष्मीनारायण मिश्र। (शब्द सीमा : 500 शब्द) 4+4+4+4

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com